इकाई 17 परिवर्तन

इकाई की रूपरेखा

17.0 प्रस्तावना
17.1 पर्यावरण : परम्परा तथा नैतिक विचार
17.2 पर्यावरण पर इस्लामी दृष्टिकोण
17.3 पर्यावरण पर इकाई दृष्टिकोण
17.4 पारम्परिक दृष्टिकोणों में विच्छेद
17.5 सारांश
17.6 अभ्यास
17.7 पाठ्य सामग्री

17.0 प्रस्तावना

यह इकाई आपको विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में उपस्थित भिन्न-भिन्न पर्यावरण बोध को सुगमता से समझने में सहायता करेगी तथा आपको उस प्रक्रिया से भी अवगत कराएगी जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण के धर्म से जुड़े बोध का स्थान धीरे-धीरे विज्ञान की मध्यस्थता के फलस्वरूप एक यान्त्रिक दृष्टिकोण ने ले लिया। यह अवबोधन महत्वपूर्ण है क्योंकि इस परिवर्तन के कारण मानव-समाज तथा पर्यावरण के बीच के आधारभूत संबंधों में बदलाव आया। मानव तथा पर्यावरण के सहजीवी संबंधों में एक निश्चित परिवर्तन हमें यूरोप में अवबोधन के विकास के साथ देखने को मिलता है। पर्यावरण की एक जीवित तत्व के रूप में मान्य अवधारणा धीरे-धीरे पृथ्वी की क्रियात्मक प्रणाली के यान्त्रिकी स्वरूप से बदलने लगी। "पर्यावरण एक ईश्वरीय शक्ति द्वारा निर्मित है" जैसे विचारों के स्थान पर एक विकासमान दृष्टिकोण आसीन होने लगा जिसके अनुसार मनुष्य भी इस विकास प्रक्रिया का एक छोटा सा अंश मात्र माना जाता है।

ऐसे परिवर्तन का महत्व, पर्यावरण की समझ के संदर्भ में, उचित रूप से समझा जा सकता है यदि हम इस परिवर्तन के भौतिक पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव को जान लें। परिवर्तन इंगित करता है पर्यावरण के साथ सहचर संबंधों के स्थान पर मानव द्वारा पर्यावरण पर अपना वर्चस्व स्थापित करने का प्रयास। यह माना जाता है कि विश्व के प्राचीन धर्मों में इसाई धर्म ऐसा है जिसमें मनुष्य को सृष्टि के केन्द्र में रखा गया है तथा अन्य सभी जीव मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन मात्र हैं। इस इकाई में यद्यपि, हम यह तर्क दे रहे हैं कि पर्यावरण का यह मानवकेंद्रित दृष्टिकोण एक प्रमुख दर्शन के रूप में तब उभरा जब पुनर्जागरण के दौरान मानवतावाद विकसित हुआ तथा 16वीं-17वीं शताब्दी की वैज्ञानिक क्रांति के बात अवधोधन का विकास हुआ।

पर्यावरण का प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक सा अर्थ नहीं होता है। पर्यावरण वस्तुतः एक प्राकृतिक तथ्य है व साथ ही सामाजिक बोध से निर्मित तथ्य भी है। यह भी महत्वपूर्ण है कि यह दोनों बातें भी स्थिर नहीं है और समय के साथ बदलती रहती हैं। प्रकृति अथवा उससे संबंधित किसी भी बोध की समीक्षा करते समय हमें यह ध्यान में रखना होगा कि पर्यावरण की प्रकृति गतिमान है। पर्यावरण का यह बोध बहुलतावादी है तथा इसीलिए हमारा कार्य-पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों को समझने का थोड़ा दुष्कर हो जाता है। इसलिए हम इस इकाई में पर्यावरण संबंधी मुख्य विचारों का निरीक्षण तो करेंगे पर साथ ही अन्य परम्पराओं के अपेक्षाकृत दूरस्थ विचारों का भी समय-समय पर समावेश करेंगे।

पर्यावरण संबंधी परम्पराओं में किस प्रकार का परिवर्तन देखने को मिलता है– यह हमारी चर्चा का मुख्य विषय है। हमने यहाँ पारम्परिक भारतीय दृष्टिकोण का विवरण दिया है फिर इस्लामी दृष्टिकोण तथा उसके बाद इकाई दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

17.1 पर्यावरण : परम्परा तथा नैतिक विचार

पर्यावरण संबंधी अधिकार पारम्परिक विवरण एक ऐसी वृहत दार्शनिक व्याख्या का अंग है जिसमें सृष्टि के सृजन के सिद्धांत पर तथा ईश्वर की प्रकृति पर चिंतन किया गया है। इसीलिए अधिकांश प्राचीन पारम्परिक विवरणों में हम पर्यावरण के प्रति एक आदर का भाव पाते हैं। इसी के साथ-साथ कुछ परम्पराएं पर्यावरण के प्रति भय के भाव से युक्त भी पायी जाती हैं। सम्भवतः ऐसा उन मानव-समाजों द्वारा पर्यावरण के विभिन्न लक्षणों को नियन्त्रित न कर सकते की बाध्यता के कारण हुआ होगा। एक अन्य इसी से संबंधित पहलू है कि अधिकांश पारम्परिक दृष्टिकोण जीववाद पर बहुल बल देते हैं जिसके फलस्वरूप पेड़-पौधों में अजैविक वस्तुओं में तथा प्राकृतिक तथ्यों में आत्मा की उपस्थिति मानी जाती है। इसके कारण ऐसे जीवों को यदि मनुष्य के समतुल्य नहीं माना जाता तो कम से कम उनके समकक्ष अवश्य माना जाता है।

पर्यावरण सम्बन्धी पारम्परिक दृष्टिकोणों के लिए औद्योगिक क्रांति एक विभाजन रेखा बनती है। इस घटना के उस ओर (अर्थात आधुनिक काल की ओर) पारम्परिक दृष्टिकोणों में एक वृहत परिवर्तन देखने को मिलता है। दूसरी ओर ऐसे दृष्टिकोण हैं जो पर्यावरण अथवा प्रकृति को (व्यापक अर्थों में) कुछ अन्तर्निहित गुणों से युक्त मानते हैं। इनके अनुसार प्रकृति की अपनी एक मूलभूत सत्ता है तथा यह ईश्वर द्वारा सृजित है। एक संपूर्ण सत्ता के रूप में, प्रकृति के सभी संघटक आपसी संबंधों तथा परस्पर आधारित संबंधों से बंधे हुए हैं। सभी संघटकों का बराबर का स्तर है तथा कोई भी दूसरे से श्रेष्ठ नहीं है। ईश्वर सृजित प्रकृति में सभी तत्व एक संतुलन की अवस्था में विद्यमान रहते हैं तथा इस लिए प्रकृति में एक प्रकार का स्थापित दृष्टिकोण होता है। यह स्थायित्व कभी-कभी असंतुलित भी होता है। पर ऐसी उथल-पुथल की अवस्था बहुत देर तक नहीं बनी रहती तथा संतुलन पुनः स्थापित हो जाता है। प्रकृति संबंधी ऐसे विचार लगभग सभी प्राचीन परम्पराओं जैसे भारतीय, यूनानी, रोमन आदि में उपस्थित हैं।

ईश्वरीय प्रेरणा से संतुलित प्रकृति का एक आंतरिक क्रिया तन्त्र है जो इस सिद्धान्त पर आधारित है कि वनस्पति संसार तथा जीव संसार दोनों में जीवन विद्यमान है। यह सिद्धान्त मानव जीवन से घुल-मिल जाता है रोचक बात यह है कि प्रकृति की व्यवस्था इन पारम्परिक दृष्टिकोणों में कुछ नैतिक मनन पर टिकी मानी जाती है। इनकी सूची इस प्रकार है:

- जीवन ईश्वर प्रदत्त है तथा मनुष्यों के साथ-साथ प्रकृति के अन्य तत्वों में विद्यमान है,
- चूंकि जीवन आदरणीय है इसलिए जीवन के समस्त स्वरूपों का सम्मान अपेक्षित है।
- पृथ्वी समस्त जीवों के लिए मातृतुल्य है, इसलिए पृथ्वी पर सब जीवों के लिए स्थान है तथा कोई भी किसी दूसरे को इस वरदान से वंचित नहीं कर सकता,
- सभी जीवों का अपना अनुभूति संसार है जो न तो पूर्णतः बंद है न किसी दूसरे पर आधिपत्य स्थापित करता है, तथा
- प्रकृति सदैव एक स्पष्ट संतुलन की अवस्था में रहती है तथा यह संतुलन बिगड़ना नहीं चाहिए।

उपरोक्त से यह स्पष्ट है कि ऐसी संपूर्ण छवि तथा प्रकृति की कार्यप्रणाली उन परिवर्तनों के कतई अनुरूप नहीं है जिनको औद्योगिक विश्व ने प्रतिपादित किया है। इसीलिए हम औद्योगिक तथा तकनीकी वर्चस्व के साथ पर्यावरण में गंभीर दरारें देखते हैं जिनका विवरण 17.5 में दिया गया है। पर उसके पहले यह उचित होगा कि हम पर्यावरण संबंधी अन्य दृष्टिकोणों का भी जायजा ले लें, अर्थात इस्लामी तथा इसाई दृष्टिकोण।

17.2 पर्यावरण पर इस्लामी दृष्टिकोण

पर्यावरण पर इस्लामी दृष्टिकोण उस सृष्टि के सृजन संबंधी सिद्धान्त का भाग है जिसमें पृथ्वी को ईश्वर द्वारा निर्मित माना जाता है– सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा। इस्लामी मतानुसार अल्लाह अपने को सृष्टि तथा व्यक्ति में उद्घाटित करता है। कुरान के अनुसार अल्लाह समस्त सृष्टि का कारण है। वह सर्वप्रथम है तथा वही सबका अन्त है। मुसलमानों का विश्वास है कि सारी सृष्टि, इसका पालन-पोषण तथा उसके दिए दिव्य विधान द्वारा संचालित है।

कुरान का संकलन स्वयं एक वृक्ष तथा उसकी जड़ों के रूप में संकेतित है: "अल्लाह एक शब्द की व्युत्पत्ति (कुरान की) करता है जो एक अच्छे वृक्ष के समान है जिसकी जड़े मज़बूत हैं तथा जिसकी सब शाखाएं जन्नत की ओर पहुँचती है। इस वृक्ष से ताज़े-फल हमेशा मिलते हैं और यह अल्लाह के हुक्म से होता है जो इस का मालिक है, और वे लोग जो अल्लाह की ओर मुखातिब है अपनी हर जरूरत की चीज़ अल्लाह से पाते हैं" (M. Ratigand Mohd. Afzall,' Islam and the Present Ecological Crisis, in ***World Religious and the Environement,*** **ed.** ***op.*** पृ. 120)।

इस्लामी दृष्टि में सृष्टि का निर्माण चार अलग-अलग अवस्थाओं में होता है। पहली अवस्था भौतिक जगत से संबंधित है तथा इसमें सभी जैविक व अजैविक पदार्थ व तत्व आते हैं। यह वह स्थिति है जिसमें अल्लाह के सृजन के रूप में मानव पृथ्वी पर आता है। दूसरी अवस्था वह है जिसमें भौतिक जगत के सभी जीवों में एक व्यवस्था प्रवेश कराई जाती है। तीसरी अवस्था में प्रत्येक जीव के लिए नियम स्थापित किए जाते हैं। चौथी अवस्था वह है जिसमें सभी जीवों के लिए अल्लाह ने निर्देश दिए हैं। यह निर्देश वास्तव में अनुभूति से संबंधित है तथा तीन स्तरों के हैं। सबसे नीचे आते हैं प्रवृत्ति के गुण जो सभी पशुओं को मिले हैं। मध्य में अनुभूतियाँ हैं जैसे दृष्टि, श्रव्यता, स्वाद, गंध आदि। यह भी सभी पशुओं को दी गई हैं। सबसे ऊपर है तर्क गुण-विवेक जो अल्लाह की मनुष्य को विशिष्ट देन है तथा जिससे अन्य सभी पशु वंचित हैं।

सृष्टि का उद्देश्य कुरान द्वारा व्याख्यापित है। यह "शिक्षा देता है कि अल्लाह ने ऐसा इरादा किया कि एक दुनिया बनायी जाए जो उसकी सत्ता को तथा उसके नूर को प्रकट करे और यही सृष्टि के निर्माण का कारण था। यह आगे कहती है कि अल्लाह ने जन्नत और ज़मीन छः कालों में बनायी। इसके पहले अल्लाह जल का शास था। भौतिक सृष्टि की रचना जल से शुरू हुई तथा वहाँ से चलकर पृथ्वी बनी और इसका शक्ल तैयार हुई और इसे जीवन को चलाने के लिए जरूरी गुण मिले हैं" (M. Rafiq & Mohd. Afzal, पृ. 122) यह महत्वपूर्ण है कि सृष्टि का उद्देश्य और सृष्टि का निर्माण ऐतिहासिक लक्षणें से युक्त है। इसीलिए अल्लाह की ताक़त केवल निर्माण तक ही सीमित नहीं है क्योंकि अल्लाह किसी को बनाकर यूं ही नहीं छोड़ देता वह उसके भरण-पोषण का भी इंतज़ाम करता है। वह सब तरह के जीवों का निर्माण करता है और उन्हें लक्षण मुक्त करता है। वह अपने बनाये लोगों तथा वस्तुओं में अलग-अलग क्षमता भी भरता है।

इस्लामी ब्रह्मांडीय परम्परा में श्रृष्टि वर्गीकृत है जहां अलग-अलग वर्गों से सम्बन्धित जीव अलग-अलग गुणों से सम्पन्न दिखाई देते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि इस योजना में मनुष्य को सर्वोपरि स्थान मिला है। अपने गुणों के साथ अलग स्तर इस प्रकार हैं (क्रमशः उत्कर्ष की व्यवस्था में)

- खनिज पदार्थ
- पौधे (पौष्टिक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता के साथ-साथ वृद्धि योग्य)
- पशु (पौष्टिक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता वृद्धि योग्य, तथा पीड़ा की अनुभूति युक्त), तथा

- मनुष्य (उपरोक्त सभी क्षमताएं एवं बोलने की क्षमता तथा तर्क करने की क्षमता)

मनुष्य का निर्माण इस उद्देश्य से है कि वह दिव्य लक्षण प्रकट करें तथा अल्लाह के प्रतिबिम्ब कार्य करे।

स्पष्ट है कि इस्लामी ब्रह्मांडीय सिद्धान्त में प्रकृति को इस प्रकार दर्शाया गया है जिसमें मनुष्य की एक विशिष्ट स्थिति है। इस कारण उसका अन्य जीवों से सम्बन्ध तथा प्रकृति के अव्यवों से सम्बन्ध वर्चस्व का है। हालांकि, यह बात देखने योग्य है कि अपनी विशिष्ट स्थिति के बावजूद मनुष्य को प्रकृति द्वारा निर्धारित की गई सीमाओं का उल्लंघन करने की छूट नहीं है जिससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाये तथा व्यवस्था भंग हो जाए।

कुरान में यह अंकित है: "अल्लाह, सर्वसशक्तिमान, सृष्टि का निर्माण करता है तथा मनुष्य का सृजन करता है व उसके अन्तर्गत जन्नत व धरती पर प्राप्त सब वस्तुएं करता है पर अल्लाह स्पष्ट निर्देश देता है, "वह अल्लाह है जो मनुष्य का सृजन किया है तथा उसे त्रृटीरहित बनाया है, जिसमें मनुष्य की वृत्तियां बनाई हैं और उनको तद्नुसार निर्देशित किया है" (M. Rafiq and Mohd. Ajmal, पृ. 126)।

17.3 पर्यावरण पर इसाई दृष्टिकोण

पर्यावरण के उन परम्परागत दृष्टिकोण ने जो प्रकृति के एक संपूर्ण व दिव्य प्रदत्त व्यवस्था वाले सिद्धान्त पर आधारित है। दो प्रकार की सम्भावनाओं को जन्म दिया है। एक के अनुसार मनुष्य अन्य जीवों के समतुल्य था तथा दूसरी के अनुसार अन्य जीवों की तुलना में मनुष्य ऊँची स्थिति पर आसीन था। पर्यावरण का यहूदी दृष्टिकोण किसी दूसरी सम्भावना का अनुमोदन करता है। यह वर्ष 1967 लिन व्हाइट जूनियर द्वारा लिखे गये एक लेख के कारण, जो पश्चिम द्वारा सामना किये जाने वाली परिस्थिति की समस्याओं पर विशेषकर केन्द्रित था, हुआ कि विश्व का ध्यान इस समस्या की ओर आकृष्ट हुआ व इस दृष्टिकोण को लेकर एक बड़ी चर्चा आरम्भ हुई। यह लेख Science नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ था और इसका प्रमुख तर्क था कि विभिन्न समुदायों में उपस्थित सामाजिक, धार्मिक परम्पराएं उन समुदायों का अपने पर्यावरणों के प्रति दृष्टिकोण निर्धारित करती हैं तथा मानव-पकृति सम्बन्धों को इस दृष्टिकोण से देखना चाहिए। अपनी बात को विस्तार से बढ़ाते हुए कहा कि इसाई धर्म की शिक्षाएं मनुष्य को ईश्वर द्वारा सृजित अन्य सभी जीवों से श्रेष्ठ मानती हैं इसलिए मनुष्य को तर्कसंगत सुविधा मिलती है कि वह प्रकृति तथा उसके संसाधनों को जिस प्रकार चाहे उपभोग में लाये। व्हाइट का तर्क था कि इस प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों का अबाध दोहन पश्चिमी विश्व में पर्यावरणीय संकट का जनक था। "पश्चिमी विचार परम्परा के इतिहास में प्रकृति को पुनः-पुनः वनों के ऐसे संदर्भ में दर्शाया गया है जो सबसे बुरे अर्थों में संकटों व दुरात्माओं से भरे परे हैं तथा समरसता व व्यवस्था रहित है व इसलिये सभ्यताओं द्वारा निर्मित आवासीय भू-दृष्यों सरीखे सौन्दर्यमय नहीं है" यह विचार 18वीं शताब्दि में कॉम्ते द बफ़न द्वारा अपनी पुस्तक Natural History में व्यक्त किये गये थे उसमें लिखा था कि "यद्यपि प्रकृति दिव्य महिमा का बाहरी सिंहासन है", मनुष्य, "सभी जीवित प्राणियों में" इसमें व्यवस्था, सामंजस्य व अधीनता स्थापित करता है। मनुष्य को ईश्वर द्वारा प्रत्येक प्राणी पर अधिकार सौंपा गया है कि हम प्रकृति में आभूषण तथा चमक पैदा करें। यह मनुष्य ही है जो झाड़ियों को साफ कर अंगूर व गुलाब उगाता है (पृ. 85)।

लिन व्हाईट जुनियर के विचारों का विरोध किया गया तथा बहुत से लेख व पुस्तकें प्रकाशित हुई जो या तो इन विचारों की आगे व्यवस्था करती थी और इस प्रक्रिया में एक कमज़ोर विपरीत तर्क देती थी अथवा अन्य धार्मिक परम्पराओं से उद्धरण देकर यह स्थापित करने का प्रयास करती थी कि मनुष्य की यह विशिष्ट स्थिति एकमात्र इसाई धर्म में ही नहीं

थी अपितु अन्य धार्मों में भी थी और इसकारण वे सभी धर्म भी समान मात्रा में दोषी सिद्ध होते थे। इस विचार के अर्थ बोध में उलझे बिना हम यह प्रयास करेंगे कि इसाई धर्म के पर्यावरण सम्बन्धी दृष्टिकोणों के सामाजिक आधार तत्व क्या है। वे मूल्य धारणायें जो इन तत्वों को प्रदर्शित करती हैं इस प्रकार है:

- मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो तत्व रूप में भी अन्य सब जीवों से भिन्न है; परिणामस्वरूप मनुष्य पृथ्वी के सभी जीवों पर प्रभुत्व स्थापित करता है।
- मनुष्य अपने लक्ष्य स्वयं निर्धारित करता है तथा उन्हें पाने के लिए अपनी ही कार्यप्रणाली भी चुनता है।
- प्रकृति से उलब्ध होने वाले संसाधन असीम है तथा मनुष्य द्वारा उनका अपनी इच्छानुसार उपभोग किया जा सकता है।
- मानवता निरन्तर प्रगति के लिए निर्दिष्ट है तथा इस प्रगति में आने वाले विघ्नों का समाधान भी स्वयं ही खोजती है, तथा
- प्रगति का अभियान कभी रूकना नहीं चाहिए। (Cf. William Catton, Jr. and Riley Dunlap, 'New Ecological Paradigm for Post Exuberant Spciology' in *American Behaviour Scientist, 24* Sept. *1980* as cited by Rev. Anand Veeraj in *World Religious and* ***the*** *Environment, op.cit, p. 107)*

इसाई धर्म में प्रकृति के विरूद्ध जो हम विद्वेष हैं तथा मनुष्य के अतिरिक्त दिव्य कृपा से जो हम अन्य सभी जीवों को वंचित पाते हैं उसका उद्‌गम रोम में व्यवस्थित धर्म के दिनों को दिया जा सकता है। सम्भवतः यह बात इसाई धर्म में अन्य विधर्मी परम्पराओं से सम्पर्क के फलस्वरूप उत्पन्न हुई पर यह केवल एक परिकल्पना है जिसको निश्चय पूर्वक न तो सिद्ध किया जा सकता है न ही खंडित किया जा सकता है। वास्तविक सत्य यह है कि "इसाई धर्म ने एक सोची समझी नीति के अन्तर्गत प्रकृति के प्रति कम से कम उदासीनता का भाव अपनाया है, यदि पूर्णतः विरोध का नहीं भी।" यह 18वीं शताब्दि के आरम्भ में हुआ कि इस मन्तव्य के प्रति थोड़ी नरमी दिखाई देने लगी। "इसाई धर्म ने अपना पारम्परिक चरित्र पूर्णतः त्यगे बिना ही एक नया कलेवर अंगीकार कर लिया जिसमें परिस्थितिकी के प्रति थोड़ी दिनता का भाव था, और यह कि मनुष्य अनेकों प्रजातियों में से एक है। सदियों के मनोवैज्ञानिक अलगाव के बाद इसाईयों ने कुछ इच्छा जताई कि वह व्यापक विश्व समुदाय के साथ इस् विषय पर एकमत हो सके"। ('The Empire of Reason' in Two *Roads Diverged* पृ. *28)*।

इस वैश्विक दष्टिकोण में यंह सुझाव निहित है कि पृथ्वी प्राकृतिक संसाधनों का तथा ऊर्जा का एक विराट भंडार है। मानव सभ्यता को इस संसाधनों का उपयोग करना चाहिए तथा प्रकृति पर वर्चस्व स्थापित करना चाहिए। प्रगति का मार्ग इसी वर्चस्व से होकर निकलता है साथ ही किसी एक संसाधन की कमी को उसका विकल्प ढूंढकर पूरा किया जा सकता है। विज्ञान तथा तकनीकी के उपकरण विकल्पों की इस खोज में लगाये जा सकते हैं। प्राकृतिक संसार सुख सुविधा के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। शास्त्रीय इसाई धर्म का यह उद्देश्यवादी सम्मान उसके वैश्विक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्वं करता है।

17.4 पारम्परिक दृष्टिकोणों में विच्छेद

दिव्य सृष्टि का विचार प्रकृति के एक जैव स्वरूप के समकक्ष था। इसके अनुसार प्रकृति एक जीवित तन्त्र था तथा इसकी कार्य प्रणाली में एक लयात्मकता थी। इस लयात्मकता ने सुखद अथवा दुखद परिवर्तनों को जो प्रकृति के इतिहास में हुए निर्धारित किया। अवबोधन के युग के आरम्भ के साथ हम प्रकृति को मशीन के समतुल्य दर्शाया गया पाते हैं। अवबोधन के युग के आरम्भ के साथ हम प्रकृति को मशीन के समतुल्य दर्शाया गया पाते हैं। औद्योगिक युग ने इस अवधारणा को और पुष्ट किया साथ ही इसमें एक विच्छेद भी उत्पन्न किया।

वास्तव में औद्योगिक क्रान्ति तथा बाद के काल ने ऐसी शक्तियों को जन्म दिया जिन्होंने सामाजिक सम्बन्धों, आर्थिक संरचनाओं तथा ज्ञान के प्रतिमानों को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया। इसी के साथ पर्यावरण के सम्बन्धी पारम्परिक दृष्टिकोणों में भी विच्छेत उत्पन्न हुआ।

औद्योगिक सभ्यता उत्पादन की ओर उन्मुख संस्कृति की पोषक थी। कुशल कारागरों को मशीन ने विस्थापित कर दिया था तथा उत्पादन का परिणाम एकमेव सरोकार बन गया था। इस परिस्थिति में प्रकृति से उपलब्ध संसाधनों का उपयोग निरन्तर बढ़ता जा रहा था। नये संसाधनों की खोज का कार्य भी प्रबल हो रहा था तथा व क्षेत्र जहां से ये संसाधन निकाले जा सकते थे औद्योगिक विश्व के नियन्त्रण में आते जा रहे थे। इस प्रक्रिया में पर्यावरण सम्बन्धी पारम्परिक विचारों को पराभाव का सामना करना पड़ा। पर्यावरण तथा इसके संसाधन अब व्यापारवाद तथा मुक्त बाजार का समर्थन करने वाली शक्तियों के अधीन थे। इस नये सिद्धान्त का निदेशन करनें वाले तीन प्रमुख लक्षण थे:

- संसाधन दोहन को उच्चतम सीमा तक बढ़ाना,
- नये संसाधनों की खोज, और
- संसाधनों से समृद्ध क्षेत्रों पर राजनैतिक नियन्त्रण स्थापित करना।

इस पद्धति में एकमात्र ध्यान औद्योगिक संस्थानों के लिए कच्चे माल की अबाध आपूर्ति। इसीलिए संसाधनों का बहुत बड़े पैमाने पर निष्कर्षण सबसे अधिक महत्व का लक्षण बन गया। नये नगरीय संस्थान उन स्थानों पर पनपे जहाँ संसाधनों के बड़े भण्डार थे। इंग्लैंड के बहुत सारे औद्योगिक नगर इसके उदाहरण हैं। वे ऐसे स्थानों पर बसाये गये जहाँ कोयले के बड़े भण्डार थे तथा जिनसे ऊर्जा पैदा करने की सामर्थ्य मिलती थी। बहुत से स्थल वस्तुओं के यातायात को सुगम बनाने के लिए नदी तटों पर बसाये गये। शीघ्र ही सारा भू-दृष्य बदलने लगा।

इसी प्रक्रिया में दो मुद्दों पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया गया– पर्यावरण के भविष्य पर तथा ब्रह्मांड के भविष्य पर। संसाधनों का दोहन इतने बड़े पैमाने पर शुरू हो गया था कि यह सम्भावना वास्तविकता में बदलने लगी कि भावी पीढ़ियों के लिए इसमें से कुछ भी बाकी न बचे। 20वीं शता. आते आते विश्व समुदाय पर यह भयावहता उजागर होने लगी थी। लोक का ध्यान पर्यावरण के इस विनाश की ओर तथा इसके परिणामों की ओर छिटपुट लेखों में खंचा जाने लगा। दो लोकप्रिय पुस्तकें जो इस प्रकृति की थीं Fair field Osborn द्वारा लिखी गई Our Plundered Planet तथा William Voyd की Road to Survival थी जो 1947 में प्रकाशित हुई थी। शीघ्र ही पर्यावरण सामाजिक चर्चाओं के केन्द्र में स्थान पाने लगा। इन चर्चाओं की प्रकृति के विषय में निम्नलिखित सूची के हमें पता चलता है:

- पर्यावरण व राष्ट्रीयता
- वैज्ञानिक वन-रोपण
- उपनिवेशवाद तथा पर्यावरण
- विज्ञान तथा पारिस्थितिकी संकट
- अतिवादी पर्यावरणवादिता
- निर्धनों की पर्यावरणवादिता, तथा
- वैश्विक पर्यावरणीय आन्दोलन

17.5 सारांश

पर्यावरण के पारम्परिक दृष्टिकोणों में औद्योगिक युग के साथ विच्छेद उत्पन्न होते हैं। संसाधन उपयोग प्रथाएं मूलरूप से परिवर्तित होती है। प्राकृतिक संसाधनों का दोहन बड़े

विशाल पैमाने पर होने लगता है। वास्तव में मशीन आधारित उद्योगों के कारण यह दोहन इतना बढ़ ज़ाता है कि जब तक कोई आधारभूत परिवर्तन न हो इसका रूकना सम्भव नहीं हो सकता है। 20वीं शताब्दि का आरम्भ इस विषय पर चर्चा को आरम्भ करता है व अब पर्यावरण की सुरक्षा एक गम्भीर मुद्दा बनने लगता है। पर्यावरणीय चर्चायें पुनः केन्द्र में आ बैठती हैं।

17.6 अभ्यास

1) पर्यावरण के इस्लामी दृष्टिकोण के प्रमुख लक्षणों पर चर्चा कीजिये।
2) पर्यावरण का इसाई दृष्टिकोण क्या है तथा इसके प्रमुख तत्व क्या है तथा यह इस्लामी दृष्टिकोण से कैसे भिन्न है?
3) पर्यावरण के पारम्परिक दृष्टिकोण में कब और कैसे विच्छेद उत्पन्न होते हैं? परीक्षण कीजिये।

17.7 पाठ्य सामग्री

O.P. Dwivedi & B.N. Tiwari, ***Environmental Crisis and Hindu Religion,*** New Delhi, 1987.

O.P. Dwivedi, ed., ***World Religions and the Environment,*** New Delhi, 1989.

Wernes Wolfgang, ed. ***aspects of Ecological Problems and Environmental Awareness in South Asia,*** New Delhi, ***1993.***

Ramchandra Guha, ***Environmentalism, A Global History,*** New Delhi, ***2000.***

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY